बिम्ब एवं समीपवर्ती शब्द

देवाशीष[1] एवं डॉ0 योगेन्द्र महतो[2]

[1]शोधार्थी

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

[2]विभागाध्यक्ष

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग

तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

सर्वप्रथम आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अंग्रेजी के Image शब्द के लिए बिम्ब शब्द का प्रयोग किया। इस दृष्टि से हिन्दी के बिम्ब शब्द का सही अर्थ जानने के लिए Image को ही जानना होगा। Image का हिन्दी अर्थ है, किसी पदार्थ को मूर्त्त रूप प्रदान करना, चित्रबद्ध करना अथवा मानसी प्रतिकृति उतारना। Image शब्द का अर्थ ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में किसी पदार्थ का मनः चित्र या मानसिक प्रतिकृति किया गया है। बिम्ब एक प्रकार का भावगर्भित शब्द चित्र है, जो नेत्र ही नहीं, वरन् सभी ज्ञानेन्द्रियों को तृप्त करता है। बिम्ब की सामान्य अवधारणा से काव्य–बिम्ब की अवधारणा में थोड़ा–सा अंतर यह रहा है कि काव्य के विविध तत्त्वों की तरह ही काव्य–बिम्ब में भी रोचकता, रंजकता और रसनीयता के धर्म को अपेक्षित ही नहीं, आवश्यक माना गया है।

बिम्बवाद – बीसवीं शदाब्दी की शुरूआत में प्रतीकवाद की अस्पष्टता और भावुकता के विरोध में पाश्चात्य साहित्य जगत् में बिम्बवादी आंदोलन का प्रवर्त्तन टी0ई0 ह्यूम के द्वारा हुआ। बिम्बवाद को स्थापित करने में टी0ई0 ह्यूम, एजरा पाउण्ड, रिचर्ड एलडिंग्टन, एफ0 एस0 फ्लिण्ट आदि का नाम प्रमुख है। 1908 ई0 में 'पोयट्स क्लब' के स्थापना के साथ ही बिम्बवाद का सिद्धांत घोषित हो गया और कुछ दिनों तक यह खूब चर्चित रहा। सन् 1914 से 1930 तक का काल बिम्बवादियों का स्वर्णिम काल रहा। बिम्बवादी आंदोलन के फलस्वरूप उस समय के रचनाकार बिम्ब–प्रधान रचनाएँ करने लगे। इस आंदोलन का एक और प्रभाव यह हुआ कि कुछ महत्त्वपूर्ण लेखकों, शेक्सपीयर, मिल्टन, दाँते, पोप, बायरन, वर्ड्सवर्थ आदि की कृतियों का मूल्यांकन बिम्ब की दृष्टि से करने की परंपरा शुरू हुई।

पाश्चात्य विद्वानों की नजर में बिम्ब

एनसायक्लोपीडिया ब्रिटेनिका के अनुसार, – ''बिम्ब चेतन स्मृतियाँ हैं, जो इन्द्रिय–बोध की मौलिक उत्तेजना के अभाव में उस इन्द्रियबोध को सम्पूर्ण रूप में या आंशिक रूप में पुनरूत्पादित करती है।''[1]

सी0 डे0 लेविस के अनुसार, – ''बिम्ब एक प्रकार का भावगर्भित शब्दचित्र है।''[2]

सुजान के लेंगर के अनुसार, – ''बिम्ब वस्तुओं के आंतरिक सादृश्य का प्रत्यक्षीकरण है।''[3]

जॉर्ज व्हेली के अनुसार,– ''बिम्ब ऐंद्रिय माध्यम के द्वारा आध्यात्मिक अथवा तार्किक सत्यों तक पहुँचने का एक मार्ग है।''[4]

एलेन टेट के अनुसार, – ''बिम्ब एक अमूर्त्त विचार अथवा 'भावना' की पुनर्रचना है।''[5]

टी0 ई0 ह्यूम के अनुसार, – ''बिम्ब दो विरोधी संवेदनाओं का आंतरिक तनाव (टेंशन) है।''[6]

ब्लिस पेरी के अनुसार, – ''बिम्बों का निर्माण शब्दों से नहीं, अपितु नग्न ऐन्द्रिय उत्तेजना से होता है।''[7]

एडिथ रेकर्ट के अनुसार, – ''बिम्ब विधान अनुभूति को मानसिक चित्रों द्वारा अभिव्यक्त करने की एक पद्धति है।''[8]

कॉफमेन के अनुसार, – ''बिम्ब उसी को कहते हैं, जो किसी एक क्षण की अवधि में बौद्धिक एवं भावात्मक सम्मिश्रण प्रस्तुत करता है।''[9]

भारतीय विद्वानों की नज़र में बिम्ब

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार, – ''काव्य का काम है कल्पना में बिम्ब अथवा मूर्त्त भावना उपस्थित करना, बुद्धि के सामने कोई विचार लाना नहीं।''[10]

''बिम्ब जब होगा तब 'विशेष' का होगा, 'सामान्य' या जाति का नहीं।''[11]

डॉ0 नगेन्द्र के अनुसार, – ''काव्य–बिम्ब शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानस–छवि है, जिसके मूल में भाव की प्रेरणा रहती है।''[12]

डॉ0 कुमार विमल के अनुसार, – ''बिम्ब विधान कला का क्रिया पक्ष है, जो कल्पना से उत्थित होता है। कला–जगत् में कल्पना के विकास की एक सरणि है। कल्पना से बिम्ब का आविर्भाव होता है और बिम्बों से प्रतीक का। जब कल्पना मूर्त्त रूप धारण करती है, तब बिम्बों की सृष्टि होती है और जब बिम्ब प्रतिमित या व्युत्पन्न अथवा प्रयोग के पौनःपुन्य से किसी निश्चित अर्थ में निर्धारित हो जाते हैं, तब उनसे प्रतीकों का निर्माण होता है। अतः कला–विवेचन की तात्त्विक दृष्टि से बिम्ब कल्पना और प्रतीक का मध्यस्थ है।''[13]

डॉ0 केदारनाथ सिंह के अनुसार, – ''बिम्ब वह शब्दचित्र है, जो कल्पना के द्वारा ऐन्द्रिय अनुभवों के आधार पर निर्मित होता है।''[14]

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि बिम्ब अनुभूतियों एवं भावनाओं के आधार पर कल्पना द्वारा निर्मित नवीन रूप योजना है, जिसमें मुख्य रूप से ऐन्द्रियता की प्रधानता होती है। अनुभूति, कल्पना, भावना, संवेदना, आवेग, सौन्दर्यबोध आदि इसके मूलभूत प्राणतत्त्व हैं।

बिम्ब और समीपवर्ती शब्द

बिम्ब के स्वरूप और गठन के विषय में अनेक भ्रांतियाँ रही हैं। यही कारण है कि कभी बिम्ब को प्रतीक का पर्याय मान लिया जाता है, तो कभी इसे चित्र, कल्पना, अलंकार, मिथ आदि के समकक्ष रख दिया जाता है। इनके बीच के संबंधों को निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत स्पष्ट करने की कोशिश की गयी है :–

बिम्ब और प्रतीक

बिम्ब प्रतीक से मिलता–जुलता शब्द है। प्रत्येक प्रतीक अपने मूल में बिम्ब ही होता है और बिम्ब ही आगे चलकर बार–बार प्रयुक्त होकर रूढ़ हो जाता है और प्रतीक बन जाता है। सामान्यतः प्रतीक तीन प्रकार के होते हैं :–

(i) परम्परागत प्रतीक – परम्परागत प्रतीक का प्रयोग प्रत्येक युग के कवि अपनी आवश्यकताओं के अनुसार करते हैं।

(ii) वैयक्तिक प्रतीक – वैयक्तिक प्रतीक की रचना कवि के विशिष्ट मानसिक गठन, संस्कार और अनुभूति की ऐकान्तिकता पर निर्भर करती है।

(iii) प्राकृतिक प्रतीक – प्राकृतिक प्रतीक का प्रयोग प्रत्येक युग के कवि एक नये दृष्टिकोण से करते हैं।

प्रतीक चाहे किसी भी प्रकार के हों, वे विशेषोन्मुख होते हैं। बिम्ब लाक्षणिक होता है, जबकि प्रतीक व्यंग्यात्मक होता है। बिम्ब प्रायः आकस्मिक होते हैं, इसका प्रयोग अनायास होता है। वे अल्प समय के निजी अंश को बाँधने का प्रयास करते हैं। प्रतीक परम्पराजीवी और सामाजिक मान्यताओं के सापेक्ष होता है। बिम्ब का आधार जीवन एवं जगत की अनेकता में है, जबकि प्रतीक एकता का बोधक होता है। प्रतीक की योजना में एक तार्किक संगति अवश्य रहती है; किंतु बिम्ब योजना/विधान में तार्किक संगति नहीं पाया जाता है। यदि प्रयोग किया भी जाता है तो इससे भाव की तीव्रता और कम ही हो जाती है।

प्रतीक मूर्त्त और अमूर्त्त दोनों हो सकता है; किंतु बिम्ब का मूर्त्त होना आवश्यक होता है तथा यह मूर्त्तता केवल विषयक ही नहीं होती, वरन् नाद, घ्राण, स्वादपरक आदि भी हो सकती है। प्रतीक किसी वस्तु का चित्रांकन नहीं करता, बल्कि संकेत की सहायता से उसकी विशेषता को बताता है। यही कारण है कि प्रतीक का ग्रहण संदर्भ से अलग भी संभव हो सकता है, किंतु बिम्ब की प्रेषणीयता उसके पूरे संदर्भ के साथ होती है। तात्पर्य यह है कि बिम्ब में वस्तु के निश्चित स्वरूप का संकेत रहता है, जबकि प्रतीक में उसकी अनिश्चित स्थिति की प्रधानता रहती है।

बिम्ब और प्रतीक में इतना अंतर होने के बावजूद विकास की दृष्टि से दोनों में पूर्वापर ऐतिहासिक संबंध है। बिम्ब ही आगे चलकर प्रतीक बन जाता है। डॉ0 कुमार विमल कहते हैं कि ''कल्पना से बिम्ब का आविर्भाव होता है और बिम्बों से प्रतीक का। जब बिम्ब प्रतिमित या व्युत्पन्न अथवा प्रयोग के पौनःपुन्य से किसी निश्चित अर्थ में निर्धारित हो जाते हैं, तब उनसे प्रतीकों का निर्माण होता है।''[15]

बिम्ब और रूपक

रूपक साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार है, जिसमें बहुत अधिक साम्य के आधार पर प्रस्तुत में अप्रस्तुत का आरोप करके अर्थात् उपमेय या उपमान के सामर्थ्य का आरोप करके और दोनों भेदों का अभाव दिखाते हुए उपमेय या उपमान के रूप में ही वर्णन किया जाता है।

कल्पना अपने शुद्ध रूप में रूपक में प्रकट होती है। कवि कल्पना दो वस्तुओं को मानस–पटल पर लाती हैं, उनकी तुलना नहीं करती। वस्तुओं के बीच की तुलना का विश्लेषण करना कल्पना का कार्य नहीं। कल्पना दो वस्तुओं के साम्य का न दर्शन करती है और न अनुभव करती है। अपितु वह उन वस्तुओं को एक साथ फेंक कर उनका सम्मिश्रण प्रस्तुत करती है। इस समय वह इस प्रकार के सम्मिश्रण से एक नवीन वस्तु या बिम्ब को जन्म देती है, जो प्रथम दोनों वस्तुओं से सर्वथा भिन्न होते हुए भी दोनों के कुछ गुणों से समन्वित होता है।

सी0 डे0 लेविस का कहना है, – ''रूपक प्रत्येक बिम्ब को प्रस्तुत कर सकता है। वह प्रत्येक को किसी अनुभूति के संदर्भ में रूपायित करता है।''[16]

नॉरमान कैलान का कथन है, – बिम्बों को संगठित रूप में व्यक्त करने के लिए रूपक उपमा का स्थान ले लेता है।''[17]

सी0 डे0 लेविस के अनुसार, – ''काव्य का प्राणतत्त्व एवं कवि का ऐश्वर्य रूपक विधान में ही निहित रहता है।''[18]

सी0 डे0 लेविस ने अपनी पुस्तक 'द पोएटिक इमेज' में बिम्ब (Image) और रूपक (Mataphor) का प्रयोग प्रायः समान अर्थ में किया है।''[19]

काव्य बिम्ब का विशुद्ध एवं सौन्दर्य मण्डित रूप रूपक के सहयोग से ही निर्मित होता है। यहाँ तक कि काव्य बिम्ब के प्रायः सभी श्रेष्ठ रूप रूपक के द्वारा ही अभिव्यक्त होते हैं। बिम्ब अपने सहज एवं प्रभावोत्पादक ढंग से रूपक में व्यक्त होते हैं। रूपक की सहायता से बिम्ब की समग्रता एवं नवीनता को अक्षुण्ण बनाए रखा जाता है। कवि कम शब्दों में

अधिक भाव या पूर्ण बिम्ब को प्रस्तुत करने के लिए रूपक की सहायता लेती है। भाषा की समाहार शक्ति रूपक में चरम को प्राप्त होती है।

रूपक बिम्ब का पूर्ववर्ती है। इसे रूपक की धारणा से पूर्णतः नहीं अलगाया जा सकता। रूपक में जहाँ सादृश्य और तुलना की भावना होती है, वहीं बिम्ब एक प्रतिसंसार है। लेकिन चूँकि काव्य–बिम्ब 'शब्द निर्मित चित्र है, इसलिए प्रतिसंसार रचने की दृष्टि से भी इसे रूपक का सहारा चाहिए। एक प्रधान बिम्ब के अन्दर कथन की अनेक इकाइयों का संश्लेषण होता है, जिसकी पहचान रूपक के रूप में की जा सकती है। इस प्रकार बिम्ब को रूपक का वाहक कहा जा सकता है।

बिम्ब और अलंकार

एक समय अलंकार सम्प्रदाय का महत्त्व रस संप्रदाय से भी अधिक था। अलंकार काव्य–पंक्तियों को अधिक प्रभावोत्पादक बनाते हैं। इससे काव्य की सुंदरता की वृद्धि होती है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहते हैं ''भावों को उत्कर्ष दिखाने और वस्तुओं के रूप, गुण और क्रिया का अधिक तीव्र अनुभव कराने में कभी–कभी सहायक होने वाली युक्ति ही अलंकार है।''[20]

आचार्य शुक्ल ने अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए सादृश्य विधान की कल्पना को प्रामुख्य दिया है, जिसे दण्डी ने अलंकार विघटन कहा था। वस्तुतः कवि अलंकारों के माध्यम से काव्य की अनुभूतियों को चाक्षुष प्रत्यक्षीकरण करने का प्रयास करता है, जिसमें सौन्दर्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। अलंकारों में प्रयुक्त उपमान योजना जब अपने क्रियात्मक रूप में प्रयुक्त होती है, जिससे श्रोता या पाठक के मन में मानसिक प्रतिच्छवियाँ उत्पन्न होने लगती हैं, तभी अलंकार के उपमान बिम्ब बन जाते हैं। इस प्रकार भामह ने सौन्दर्य को अलंकारों के सहायक तत्त्व के रूप में स्वीकार कर अप्रत्यक्ष रूप से बिम्ब विधान की स्वीकृति दी है। वस्तुतः सौन्दर्य ही वह एक तत्त्व है, जो अलंकार और बिम्ब में समान रूप से अनुस्यूत है।

अलंकार की अपेक्षा बिम्ब अधिक व्यापक है। बिम्ब कविता का कोरा शृंगार नहीं है, बल्कि उसका काव्य की अंतरचेतना से संबंध है। वह कविता की विषय–वस्तु एवं रूप–विधान दोनों से संबद्ध है। अलंकार की अपेक्षा बिम्ब के अधिक व्यापक होने का कारण यह भी है कि जहाँ बिम्ब का सीधा संबंध मानव–मन की गहराइयों (मनोविज्ञान की भाषा में उपचेतन स्तर) से है, वहीं उपमा, रूपक आदि को छोड़ शेष अधिकांश अलंकार अधिक–से–अधिक मन की ऊपरी सतह अथवा मन के चेतन स्तर से ही संबंधित हैं। अलंकार काव्य–पंक्तियों की ऊपरी सजावट अधिक करते हैं, काव्य में चमत्कार अधिक पैदा करते हैं, उसे अनुभूति की गहनता से मंडित उतना अधिक नहीं कर पाते, जितना कि बिम्ब करता है। दूसरी बात यह कि कविता में प्रयुक्त कोई अलंकार जहाँ अपने में पूर्ण होता है, वहाँ बिम्ब किसी संदर्भ से जुड़ा होता है। तीसरी बात यह है कि अलंकार किसी–न–किसी वस्तु का अनुगामी होता है, जबकि बिम्ब प्रतिनिधित्व करने वाला होता है। डॉ0 केदारनाथ सिंह कहते हैं– ''अलंकार में हम पाते हैं कि चंद्रमा की सत्ता या तो मुख की समता में है या उसके विरोध में जबकि बिम्ब के अंतर्गत हम देखते हैं कि मंदिर के शिखर के पीछे उगने वाला एकांत पीला चाँद भी अपने आप में एक सार्थक बिम्ब हो सकता है।''[21]

बिम्ब और मिथ

बिम्ब व्यक्ति द्वारा निर्मित होते हैं, मिथ जाति अथवा समूह द्वारा निर्मित होते हैं। बिम्ब के पीछे वैयक्तिक कल्पना होती है, मिथ के पीछे जातीय या सामूहिक कल्पना होती है। डॉ0 रमेश कुंतल मेघ कहते हैं, – ''मिथक का संबंध मनुष्य के बजाय मानवता के सामूहिक इतिहास के है। अतः वे सामूहिक चेतना की विरासत हैं।''[22]

किसी समाज या जाति के साथ कोई निश्चित बिम्ब नहीं जुड़े होते (क्योंकि बिम्ब व्यक्ति द्वारा निर्मित होते हैं), किन्तु प्रत्येक समाज अथवा जाति के साथ कुछ मिथ अथवा पौराणिक कल्पनाएँ अवश्य जुड़ी होती हैं। रावण के दस मुख और बीस हाथ, हनुमान द्वारा पर्वत उठाकर ले जाना, शिव का तीसरा नेत्र, समुद्र–मंथन, शेष नाग के फन पर पृथ्वी का टिका होना आदि भारतीय समाज के साथ जुड़े हुए मिथ हैं और वे इतने प्रचलित हो चुके हैं कि भारतीय जीवन का अंग ही बन गए हैं। इसीलिए जहाँ कविता में व्यक्तिगत बिम्बों को समझने में प्रायः कठिनाई होती है, वहीं इन मिथकों के आधार पर निर्मित काव्य को समझना उतना कठिन नहीं होता। यदि किसी कविता में शिव के तीसरे नेत्र की चर्चा आती है, तो पाठक सहज ही समझ जाता है कि कवि विनाश की भावी संभावना को अभिव्यक्ति देना चाहता है। इसी भाँति एक विशेष प्रकार की भयावहता का बिम्ब प्रस्तुत करने के लिए आज का कवि रावण के दस मुखों और बीस हाथों की चर्चा कर सकता है।

सारतः बिब अनुभूतियों एवं भावनाओं के आधार पर कल्पना द्वारा निर्मित नवीन रूप योजना है, जिसमें मुख्य रूप से ऐन्द्रियता की प्रधानता होती है। अनुभूति, कल्पना, भावना, संवेदना, आवेग, सौन्दर्यबोध आदि इसके मूलभूत प्राणतत्त्व हैं। प्रतीक, रूपक, अलंकार, मिथ आदि से साम्य रखते हुए भी बिम्ब तात्त्विक दृष्टि से इन सबसे भिन्न है।

संदर्भ–सूची

1. एनसायक्लोपीडिया ब्रिटेनिका, जिल्द 12, पृ0 103
2. दी पोएटिक इमेज : सी0 डे0 लेविस, पृ0 19
3. प्राब्लम्स ऑफ आर्ट : सुजान के0 लेंगर, पृ0 132
4. पोएटिक प्रोसेस : जॉर्ज व्हेली, पृ0 145
5. सीलेक्टेड एसेज : एलेन टेट, पृ0 83
6. स्पेक्यूलेशन : टी0 ई0 ह्यूम, पृ0 281
7. ए स्टडी ऑफ पोएट्री, पृ0 94–95
8. न्यू मेथड्स फार दी स्टडी ऑफ लिटरेचर, पृ0 27
9. इमेजिस्म, पृ0 141
10. चिंतामणि (दूसरा भाग), पृ0 228
11. रस मीमांसा, पृ0 310
12. काव्य–बिम्ब, पृ0 03
13. सौन्दर्यशास्त्र के तत्त्व, पृ0 217
14. आधुनिक हिंदी कविता में बिम्बविधान, पृ0 23
15. सौन्दर्यशास्त्र के तत्त्व, पृ0 217
16. द पोएटिक इमेज, पृ0 02
17. पोएट्री इन प्रैक्टिस, पृ0 127
18. द पोएटिक इमेज, पृ0 17
19. द पोएटिक इमेज, पृ0 17
20. रस–मीमांसा, पृ0 358
21. आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब–विधान, पृ0 39
22. चिति की लीला में प्रतीक का प्रकार्य (लेख), आलोचना, अक्टूबर–दिसम्बर, 1967